प्राचीन भारत में कुषाण कला के अन्तर्गत विदेशी स्त्रियों की वेशभूषा

चन्द्रोदय सिंह

समकालीन साहित्य तथा उस समयकी प्रस्तर मूर्तियों के विविध उल्लेख कला के नमूनों से न केवल प्रमाणित हुए हैं वरन् कुषाण काल में नागरिकों की सम्पन्नता तथा उनकी रूचि को प्रकट करते हैं। तत्कालीन मथुरा कला में जहॉ एक ओर विशुद्ध भारतीय वेश दृष्टिगोचर होता है। उसके साथ ही साथ विदेशी वेश भी। ठीक इसी प्रकार गान्धार–कला में विदेशी कुषाण वेश के साथ भारतीय वेश भी प्रयुक्त हुआ। वस्त्रों में कुषाण प्रभाव गुप्तकाल के प्रारम्भ तक विद्यमान रहा। दोनों ही संस्कृतियों में भारतीय तथा विदेशी संस्कृति द्वारा परस्पर वस्त्रों का आदान–प्रदान सामंजस्य के उच्च स्वरूप
का द्योतक है। भारतीयों द्वारा कुषाण वेश का अनुकरण निःसंदेह दोनों के मध्य आत्मीयता का एक बेमिसाल उदाहरण है।